ISSN 097-6459

शोध-संप्रेषण

SHODH-SAMPRESHAN

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Multidisciplinary Research Journal

e-mail : shodhsampreshan36@gmail.com

RRDC
Research & Research Development Centre
Research Journal
Conferences
Seminars
International Events

शोध एवं अनुसंधान के लिए समर्पित अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल

International Research Journal for Research & Research Activities

Scanned with CamScanner

ISSN 097- 6459

हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त जनजातीय जीवन में गरीबी की समस्या

डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर
जिला– बलरामपुर–रामानुजगंज
(छ0ग0)

गरीबी आदिवासियों की प्रमुख समस्याओं में से एक है। यह समस्या आदिवासियों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण होने के साथ ही उनके निम्न आर्थिक स्तर के लिए भी उत्तरदायी है। "ग्रामीण भारत में निवास करने वाली जनजातियों की 45.8 प्रतिशत आबादी और नगरीय भारत में निवास करने वाली जनजातियों की 35.6 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा के नीचे गुजर–बसर करती है।"1अधिकांश लोग अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते हैं। देश की अधिकांश जनजातीय आबादी कृषि के द्वारा अपनी आजीविका चलाती है,

गरीबी आदिवासियों की प्रमुख समस्याओं में से एक है। यह समस्या आदिवासियों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण होने के साथ ही उनके निम्न आर्थिक स्तर के लिए भी उत्तरदायी है। "ग्रामीण भारत में निवास करने वाली जनजातियों की 45.8 प्रतिशत आबादी और नगरीय भारत में निवास करने वाली जनजातियों की 35.6 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा के नीचे गुजर–बसर करती है।"1अधिकांश लोग अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते हैं। देश की अधिकांश जनजातीय आबादी कृषि के द्वारा अपनी आजीविका चलाती है, लेकिन जोत का आकार अत्यधिक छोटा होने और कृषि के परंपरागत तरीकों की वजह से उनकी उपज बहुत ही सीमित है, जो उनके जीवनयापन के लिए अपर्याप्त है। आदिवासियों की बहुत बड़ी आबादी खेतिहर मजदूर के रूप में भी कार्य करती है।साथ हीबहुत से आदिवासी आज भी बंधुआ मजदूरी करने को विवश हैं। जनजातीय जनसंख्या का एक बड़ा भाग जो कुछ समय पहले तक वन संपदा के उपयोग द्वारा अपनी आजीविका चलाता था, उस पर वन संपदा का उपयोग करने पर प्रतिबंध लग जाने से निर्धनता की समस्या और अधिक गंभीर हो गयी है। इसके अतिरिक्त बाहरी समूहों के लोगों ने भी इनकी परंपरागत आत्मनिर्भर जीवन शैली में हस्तक्षेप कर इनकी समस्या को और अधिक बढ़ाया है। आज स्थिति यह है कि साधनों की कमी के कारण जनजातियों का एक बड़ा हिस्साया तो भूमिहीन श्रमिकों के रूप में कार्य करने के लिए विवश है अथवा ये लोग अपने परंपरागत निवास क्षेत्रों को छोड़कर नगरों में नौकरी या औद्योगिक केन्द्रों में श्रमिकों के रूप में कार्य करने लगे हैं। ये श्रमिक औद्योगिक शहरों में बहुत ही विषम परिस्थितियों में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। औद्योगिक विकास और सिंचाई की बड़ी–बड़ी परियोजनाओं से जहाँ बड़े और संपन्न काश्तकारों को लाभ पहुँचा है, वहीं आदिवासियों को अपने मूल स्थान को छोड़ने और विस्थापित होने के लिए मजबूर होना पड़ा है। आदिवासियों की निर्धनता के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं –

1. कृषि का पिछड़ापन
2. वन नीति, जिसके माध्यम से जनजातियों को वनोपजों के दोहन से वंचित किया गया। इसके फलस्वरूप उनके सामने बेरोजगारी, आवास और ठेकेदारों द्वारा आर्थिक शोषण की समस्या बढ़ी है।
3. परंपरागत कृषि भूमि से उनका पृथक्करण
4. सरकारी विकास कार्यक्रमों का दोषपूर्ण क्रियान्वयन
5. अधिक जन्मदर

इसके अतिरिक्त अशिक्षा, स्वास्थ्य का निम्न स्तर, गृह उद्योगों का पतन तथा प्रकृति पर अत्यधिक निर्भरता भी गरीबी की समस्या के सहायक कारण रहे हैं।

किसी भी समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए आर्थिक विकास एक पूर्व आवश्यकता है। इसके विपरीत आज जनजातियों में निर्धनता की सीमा किसी भी दूसरे समाज की तुलना में कहीं अधिक है। अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जनजातियों में पारिवारिक विघटन और अनेक मामलों में चारित्रिक पतन का मुख्य कारण

Scanned with CamScanner